



2026:AHC:33342-DB

इलाहाबाद उच्च न्यायालय

आपराधिक अपील संख्या - 675 वर्ष 1985

नरेश बाबू उर्फ राम बाबू और अन्य

.....अपीलकर्ता(गण)

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य

.....प्रत्यर्थी(गण)

अपीलकर्ता(गण) के अधिवक्ता : आयुष मिश्रा, दुर्गा प्रसाद तिवारी, के.एम. मिश्रा, एम.

इस्लाम, नंद किशोर मिश्रा, प्रभा शंकर मिश्रा, राजीव
चतुर्वेदी, रमेश कुमार, सौरभ बसु, शिल्पा आहूजा, श्रवण
कुमार पांडे, सुशील कुमार दुबे

प्रत्यर्थी(गण) के अधिवक्ता : डी.जी.ए., जी.पी. दीक्षित

न्यायालय संख्या - 46

29.01.2026 को निर्णय सुरक्षित

16.02.2026 को निर्णय पारित

माननीय न्यायमूर्ति सिद्धार्थ

माननीय न्यायमूर्ति जय कृष्ण उपाध्याय

(न्यायमूर्ति जय कृष्ण उपाध्याय द्वारा प्रदत्त)

1. अपीलकर्ता संख्या 2, सतीश कुमार उर्फ शैलेंद्र के विद्वान अधिवक्ता श्री सौरभ यादव, और राज्य की ओर से विद्वान ए.जी.ए.-I श्री जी.एन. कनौजिया की दलीलें सुनीं, और विचारण न्यायालय के अभिलेख का अवलोकन किया।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



2. यह आपराधिक अपील, अपर सत्र न्यायाधीश/विशेष न्यायाधीश (ई.सी.अधिनियम), इटावा द्वारा दिनांक 15.03.1985 को सत्र विचारण संख्या 129/1984, मुकदमा अपराध संख्या 65/1984 में दिए गए निर्णय और आदेश के विरुद्ध दायर की गई है; जिसमें अपीलकर्ता सतीश कुमार उर्फ शैलेंद्र कुमार को भा.दं.सं. की धारा 302 के तहत आजीवन कारावास की सज़ा सुनाई गई, और अपीलकर्ता नरेश बाबू उर्फ राम बाबू को भा.दं.सं. की धारा 302 (धारा 34 के साथ पठित) के तहत आजीवन कारावास की सज़ा सुनाई गई।

3. इस अपील के लंबित रहने के दौरान, अपीलकर्ता संख्या 1, यानी नरेश बाबू का निधन हो गया। अतः उनकी ओर से दायर अपील को उपशमित मानते हुए खारिज कर दिया गया, और अब अपील की सुनवाई केवल अपीलकर्ता संख्या 2 - सतीश कुमार के लिए की गई है।

4. अभियोजन पक्ष का मामला यह है कि मृतक देवेंद्र कुमार, उनकी बहन पी.डब्ल्यू.-1 श्रीमती शशि प्रभा (शिकायतकर्ता), और अभियुक्त नरेश बाबू उर्फ राम बाबू तथा उनका पुत्र अभियुक्त सतीश कुमार उर्फ शैलेंद्र कुमार - सभी ग्राम-रामपुरा, थाना-बकेवर, जिला-इटावा के निवासी हैं। अभियुक्त का घर, मृतक देवेंद्र कुमार दुबे के घर से सटा हुआ और उसके पश्चिम दिशा में स्थित है। मृतक देवेंद्र कुमार के घर के सामने एक कुआँ स्थित है, जिससे आस-पड़ोस के घरों में रहने वाले लोग पानी भरते हैं और जहाँ वे स्नान करते हैं। इस कुएँ का पानी एक कच्ची नाली के माध्यम से पश्चिम दिशा की ओर बहता है। यह नाली, शिव नारायण के घर के पास पहुँचकर उत्तर दिशा की ओर मुड़ जाती है। अभियुक्त के घर का मुख्य दरवाज़ा पश्चिम दिशा में उस रास्ते पर खुलता है, जो उत्तर से दक्षिण की ओर जाता है। घटना से दो वर्ष पूर्व तक, अभियुक्त नरेश बाबू और सतीश कुमार के घर की उत्तरी दिशा में कोई दरवाज़ा नहीं था। नक्शा नज़री (प्रदर्श का-12) में बिंदु 'जी' से दिखाया गया उत्तरी तरफ का दरवाज़ा, घटना से लगभग 1 1/2 - 2 साल पहले, और नरेश बाबू की बेटी कुमारी ममता की शादी के समय, आरोपी द्वारा खोला गया था। दरवाज़ा 'जी' खोलने के ठीक बाद, उत्तरी तरफ एक चबूतरा भी बनाया गया था। इसके बाद, आरोपी ने फूलों के पौधे लगाए, घास काटने की मशीन लगाई, और इस तरह अपने घर के उत्तर में, कुएँ के पश्चिम में, और उस नाली के दक्षिण में स्थित ज़मीन का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। आरोपी को लगा कि वह नाली, जिससे कुएँ का पानी पश्चिम की ओर बहता था, उस ज़मीन का इस्तेमाल करने वालों के लिए एक रुकावट थी; इसलिए, उन्होंने देवेंद्र कुमार दुबे से कहा कि वे कुएँ का पानी पूरब की ओर बहाएँ। इसी मकसद से, आरोपी नरेश बाबू ने हत्या की घटना से एक "अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



दिन पहले, मिट्टी का ढेर लगाकर उस नाली से पानी के बहाव को रोक दिया था। नाली में इस रुकावट के कारण, पानी आस-पास की ज़मीन में फैलने लगा।

5. घटना वाले दिन, यानी 29.02.1984 को, जब मृतक देवेंद्र कुमार सुबह करीब 10 बजे घरेलू कामों के लिए कुएं से पानी निकाल रहे थे, तो उन्होंने देखा कि पानी के बहाव में रुकावट आ रही है। देवेंद्र तुरंत उस जगह पर गए जहां रुकावट थी और अपने पैर से उस रुकावट को हटाने लगे, ताकि पानी नाली से होकर बह सके। देवेंद्र कुमार अभी आधी ही रुकावट हटा पाए थे कि दोनों आरोपी अपने घर के उत्तरी दरवाज़े से होते हुए वहां पहुंच गए। दोनों आरोपियों ने देवेंद्र कुमार से कहा कि इस रुकावट को हटाया नहीं जाना चाहिए। इस पर देवेंद्र कुमार ने कहा कि पहले भी पानी उनकी नाली से होकर पश्चिम की ओर बहता रहा है, इसलिए आगे भी वह उसी तरह बहता रहेगा। आरोपी नरेश बाबू उर्फ राम बाबू ने देवेंद्र कुमार दुबे से कहा कि वह रुकावट न हटाएं, और अगर उन्होंने ऐसा करने की कोशिश की, तो उन्हें जान से मार दिया जाएगा। यह धमकी सुनकर, श्रीमती शशि प्रभा (पी.डब्ल्यू.1), जो मृतक के घर के उत्तर में बने चबूतरे पर बैठी थीं, खड़ी हो गईं और ज़ोर से चिल्लाकर लोगों को बुलाया। शोर सुनकर गवाह जय राम (पी.डब्ल्यू.-2) और तिजोली, पी.डब्ल्यू.-2 जय राम के घर के उत्तर की ओर पहुंच गए; और राम प्रताप, शिव नारायण के घर के दक्षिण की ओर पहुंच गए। इसी बीच, आरोपी नरेश बाबू ने अपनी धोती की कमर में खोसी हुई एक देसी पिस्तौल निकाली और यह कहते हुए कि "ये लोग तुम्हें नहीं बचा पाएंगे," देवेंद्र कुमार को जान से मारने के इरादे से अपनी देसी पिस्तौल से गोली चलाने की कोशिश की, लेकिन गोली चली नहीं (मिस-फायर हो गई)। इसके बाद, आरोपी सतीश कुमार ने अपने पास रखी हुई देसी पिस्तौल निकाली और देवेंद्र कुमार पर गोली चला दी। यह गोली देवेंद्र कुमार की छाती के बाईं ओर लगी। उन्होंने अपने दाहिने हाथ से उस घाव को दबाया और जय राम के घर की ओर भागे। देवेंद्र कुमार, गवाह (पी.डब्ल्यू.2) जय राम के घर के अंदर घुसे और घर के बरामदे में रखे एक तख्त पर गिर पड़े। तख्त पर गिरने के एक मिनट के अंदर ही देवेंद्र कुमार की वहीं मृत्यु हो गई।

6. पी.डब्ल्यू.-1, श्रीमती मृतक देवेंद्र कुमार की सगी बहन शशि प्रभा ने घटना के तुरंत बाद उसके बारे में एक रिपोर्ट लिखी और उसे अपनी बहन के बेटे राजेश के ज़रिए पुलिस स्टेशन भेज दिया। राजेश ने यह लिखित रिपोर्ट उसी दिन, यानी 29.02.1984 को सुबह 11:45 बजे पुलिस स्टेशन-बकेवर में जमा कर दी थी; घटना स्थल से बकेवर पुलिस स्टेशन की दूरी लगभग 8 किलोमीटर "अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



थी। इस लिखित रिपोर्ट के आधार पर, आरोपी नरेश बाबू और सतीश कुमार के खिलाफ भा.दं.सं. की धारा 302 के तहत एक मामला दर्ज किया गया।

7. मामले की विवेचना का काम उपनिरीक्षक सुरेंद्र सिंह सेंगर को सौंपा गया, जिन्होंने तुरंत विवेचना शुरू कर दी। हेड मोहरर मेवा लाल और राजेश कुमार के बयान दर्ज करने के बाद, विवेचना अधिकारी दोपहर 12:30 बजे सुरेंद्र सिंह के साथ मोटरसाइकिल से पुलिस स्टेशन- बाकेवर से रवाना हो गए। उन्होंने उपनिरीक्षक राम आश्रय, कांस्टेबल राकेश कुमार और कांस्टेबल विजय सिंह को भी घटना स्थल पर पहुँचने का निर्देश दिया। वह उसी दिन दोपहर लगभग 1 बजे दुर्घटना स्थल पर पहुँच गए। उन्होंने सबसे पहले श्रीमती शशि प्रभा (पी.डब्ल्यू.-1) का बयान दर्ज किया। इसके बाद उन्होंने उपनिरीक्षक सुरेंद्र सिंह को 'शवपरीक्षण रिपोर्ट' लिखवाई। उन्होंने उपनिरीक्षक राम आश्रय और कांस्टेबल राकेश और विजय सिंह को आरोपियों को गिरफ्तार करने के उद्देश्य से उनके घर की तलाशी लेने का निर्देश दिया। इन लोगों ने विवेचना अधिकारी श्री सेंगर को दोपहर लगभग 3:30 बजे सूचित किया कि आरोपियों को गिरफ्तार नहीं किया जा सका। शवपरीक्षा रिपोर्ट और अन्य ज़रूरी दस्तावेज़ तैयार करने के बाद, शव को पोस्टमार्टम के लिए इटावा ले जाने हेतु पुलिस कांस्टेबल श्री विजय सिंह और राकेश कुमार को सौंप दिया गया। विवेचना अधिकारी ने घटना स्थल का मुआयना किया और श्रीमती शशि प्रभा (शिकायतकर्ता) की मदद से शाम लगभग 5 बजे 'नक्शा नज़री' तैयार किया। उन्होंने उस तख्त से, जिस पर देवेंद्र कुमार का शव पड़ा था, सामान्य लकड़ी और खून से सनी लकड़ी के नमूने लिए।

8. इसके बाद उन्होंने अन्य प्रत्यक्षदर्शियों और शवपरीक्षण रिपोर्ट के गवाहों के बयान दर्ज किए। उसी दिन रात लगभग 11:30 बजे, एस.ओ. सुरेंद्र नाथ मिश्रा, पुलिस थाना - बाकेवर, रामपुर गाँव पहुँचे और उन्होंने विवेचना शुरू की। श्री एस.एन. मिश्रा ने 08.03.1984 को दोनों आरोपियों की संपत्ति कुर्क कर ली, ताकि उन्हें न्यायालय या पुलिस के सामने पेश होने के लिए मजबूर किया जा सके। आरोपी 09.03.1984 को मजिस्ट्रेट की न्यायालय में पेश हुए। एस.ओ. श्री एस.एन. मिश्रा ने 19.03.1984 को जिला जेल, इटावा में आरोपियों के बयान दर्ज किए और उसके बाद 29.03.1984 को दोनों आरोपियों के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल कर दिया।

9. देवेंद्र कुमार के शव का पोस्टमार्टम जिला अस्पताल, इटावा के डॉ. के.सी. जैन द्वारा 01.03.1984 को दोपहर लगभग 03:30 बजे किया गया। उन्हें निम्नलिखित मृत्यु-पूर्व चोटें मिलीं:-

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



बाहरी चोट -

सीने के सामने 2.5 सेमी x 2.0 सेमी का गोली लगने का प्रवेश घाव। बाईं निप्पल से 8 सेमी की दूरी पर, घड़ी की 7 बजे वाली स्थिति पर। टैटूइंग (गोली के निशान) और कालापन मौजूद।

आंतरिक चोटें

(i) स्टर्नम (सीने की हड्डी) में फ्रैक्चर और 7वीं, 8वीं दाईं पसली के मध्य भाग में फ्रैक्चर।

(ii) दाईं और बाईं प्लूरा (फेफड़ों की झिल्ली) फटी हुई।

(iii) दाईं प्लूरल कैविटी में 8 औंस और बाईं में 1/2 औंस रक्त जमा था।

(iv) दाएं और बाएं फेफड़े फटे हुए।

(v) पेरिकार्डियम (हृदय की बाहरी झिल्ली) फटी हुई।

(vi) हृदय का दायां किनारा फटा हुआ।

10. डॉक्टर की राय में, देवेंद्र कुमार की मृत्यु उन चोटों के परिणामस्वरूप हुए आघात (शॉक) और रक्तस्राव (हेमरेज) के कारण हुई थी। डॉक्टर को सीने की दाईं ओर की दीवार के नीचे, पसलियों और सीने की मांसपेशियों के बीच एक धातु की गोली भी मिली। उन्होंने उस गोली (प्रदर्श वी) को बाहर निकाला और उसे एक सीलबंद लिफाफे में रख दिया।

11. ऊपर बताए गए आरोप, अभियुक्तों नरेश बाबू और सतीश कुमार के खिलाफ 24.07.1984 को श्री जे.के. माथुर, अपर सत्र न्यायाधीश, इटावा द्वारा तय किए गए थे। दोनों अभियुक्तों ने आरोपों से इनकार किया और मुकदमे की मांग की। उनका पक्ष यह है कि आपसी दुश्मनी के कारण उन्हें इस मामले में झूठा फंसाया गया है।

12. अभियोजन पक्ष के बयान के समर्थन में, अभियोजन पक्ष ने पी.डब्ल्यू.1 श्रीमती शशि प्रभा; पी.डब्ल्यू.2 जय राम; पी.डब्ल्यू.3 डॉ. के.सी. जैन और पी.डब्ल्यू.4 उपनिरीक्षक सुरेंद्र सिंह सेंगर की गवाही ली है।

13. पी.डब्ल्यू.1 श्रीमती शशि प्रभा, मृतक की सगी बहन हैं। वह इस मामले की शिकायतकर्ता हैं और घटना की चश्मदीद गवाह भी हैं। उन्होंने लिखित रिपोर्ट, प्रदर्श का-1 को साबित किया है।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



उन्होंने जनेऊ (प्रदर्श I), बनियान (प्रदर्श II), अंडरवियर (प्रदर्श III) और स्वेटर (प्रदर्श IV) को भी साबित किया है, जिन्हें मृतक देवेंद्र कुमार घटना के समय पहने हुए थे। उन्होंने कहा कि:-

(i) यह लगभग एक साल पहले, 29.2.1984 को हुआ था; वह मेरे घर के उत्तर में बने चबूतरे पर बैठी हुई थी। घटना से एक दिन पहले, नरेश बाबू ने मिट्टी का बांध बनाकर नाली (ड्रेन) को रोक दिया था, जिसके कारण पानी नाली में पश्चिम की ओर जाने के बजाय पूरी गली में फैलने लगा। घटना वाले दिन, पानी भरते समय देवेंद्र ने कहा कि तुमने यह कैसा बांध बनाया है, पानी तो फैलता ही जा रहा है। यह कहकर, देवेंद्र ने अपने पैरों से नाली के बांध से कीचड़ हटाना शुरू कर दिया ताकि पानी नाली से बह सके।

(ii) आरोपी अपने घर के नए टूटे हुए दरवाजे से बाहर आए और गली में नाली के बांध के पास पहुँचकर कहने लगे, "तुम क्या कर रहे हो? बांध नहीं खुलेगा।" देवेंद्र ने कहा, "यह कैसा इंसान है? पानी हमेशा यहीं से बहता आया है और अब भी यहीं से बहेगा।" आरोपी राम बाबू ने कहा, "बांध नहीं खुलेगा, वरना हम तुम्हें जान से मार देंगे।" इसी बीच, आरोपी नरेश बाबू ने अपनी धोती की कमर से एक पिस्तौल निकालते हुए कहा, "क्या ये लोग तुम्हें बचा लेंगे?" और पिस्तौल से गोली चला दी, लेकिन पिस्तौल चली नहीं। ठीक उसी समय, आरोपी सतीश ने पिस्तौल से गोली चलाई, जो देवेंद्र की छाती में जा लगी। गोली लगने के बाद, देवेंद्र अपनी छाती पर दायाँ हाथ रखे हुए पूरब की ओर भागा और जयराम के बरामदे में रखे तख्त पर गिर पड़ा। मैं उसके पीछे-पीछे गया और देखा कि देवेंद्र के दोनों हाथ उसकी छाती के घायल हिस्से पर थे; मेरे पहुँचने के एक मिनट के भीतर ही उसकी मृत्यु हो गई। मेरी चीखें सुनकर जयराम, तिजोली और राम प्रताप वहाँ आ पहुँचे; उन तीनों ने इस घटना को अपनी आँखों से देखा था।

(iii) कुछ समय बाद, और भी कई औरतें जयराम के घर आ गईं। मैं घर लौट आया और एक रिपोर्ट लिखी, जो इस समय मेरे सामने है और जिस पर मेरे हस्ताक्षर हैं। (रिपोर्ट में प्रदर्श ए-1 के रूप में शामिल)। यह रिपोर्ट मेरी बहन के बेटे राजेश के ज़रिए पुलिस थाने भिजवा दी गई। मेरे भाई देवेंद्र की हत्या सुबह लगभग 10:00 बजे हुई थी।

(iv) बांध के कारण, नाली का पानी फैलकर गली के उत्तरी हिस्से में आ गया था। दक्षिणी हिस्से में पानी नहीं फैला था। नाली पार करते समय जानवरों के पैरों से कुछ कीचड़ उसके आस-पास जमा हो गया था। वादी लोग अपने घर के उत्तरी हिस्से में ही शौच आदि के लिए जाते थे, जिसके

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



कारण उन्हें वहाँ से पानी साफ़ करने की ज़रूरत पड़ती थी। इसलिए, प्रत्यर्थियों ने देवेंद्र से कहा था कि वह कुएँ के पानी का बहाव पूरब की ओर मोड़ दे, ताकि उनकी ज़मीन सूखी रहे। घटना स्थल से लेकर जयराम के तख्त तक, कहीं भी खून के कोई निशान नहीं थे।

(v) किसी भी आरोपी ने मेरे सामने अपनी पिस्तौल में कारतूस नहीं भरा था। जब सतीश अपने दरवाज़े से बाहर आया, तो उसके हाथ में पिस्तौल नहीं थी। मैं यह नहीं देख पाया कि घटना के समय उसने पिस्तौल कहाँ से निकाली थी। यह कहना गलत है कि मैंने घटना नहीं देखी। यह कहना भी गलत है कि इंस्पेक्टर के गाँव पहुँचने के बाद इंस्पेक्टर को रिपोर्ट लिखी गई थी। जिस दिन देवेंद्र की हत्या हुई थी, उस दिन शिवरात्रि थी और देवेंद्र ने उस दिन कुछ भी नहीं खाया था। देवेंद्र 28 और 29 की दरमियानी रात को जागा और रात में लगभग 1:30 - 2 बजे 1 1/2 रोटी खाई।

14. पी.डब्ल्यू.2, जय राम, भी घटना का चश्मदीद गवाह है। जय राम का घर घटना स्थल से लगभग 30-33 कदम की दूरी पर स्थित है। उसने बयान दिया कि :-

(i) यह लगभग 11 महीने पहले की बात है, सुबह लगभग 10:00 बजे। मैं अपने घर के बरोठे (बरामदे) में बैठा था। शशि प्रभा और मुन्नू ने चिल्लाकर कहा, "दौड़ने वाले हमारे भाई को मार रहे हैं।" बरोठे (बरामदे) से, मैं अपने दरवाज़े के सामने बनी पक्की गली में आ गया। तिजोली तुरंत मेरे पीछे-पीछे आया। न्यायालय में मौजूद आरोपी नरेश बाबू ने कहा, "क्या गाँव वाले उसे बचा लेंगे?" नरेश बाबू ने एक गोली चलाई, लेकिन उससे कोई आवाज़ नहीं हुई। गोली का निशाना देवेंद्र था। देवेंद्र थोड़ा पीछे की ओर झुका, और आरोपी सतीश ने अपनी पिस्तौल से, या अपने रुमाल में रखी किसी और चीज़ से गोली चलाई, जो देवेंद्र की छाती में लगी। देवेंद्र ने अपना दाहिना हाथ गोली के घाव पर रखा, मेरे बरोठे (बरामदे) में भागा, और तख्त पर गिर पड़ा।

(ii) राम बाबू के घर की नाली पश्चिम दिशा में स्थित है। यहीं से उसके घर का पानी बहता है। उसके घर का पानी उस नाली में नहीं बहता जहाँ बाँध लगाया गया था और जहाँ घटना हुई थी। यह नाली पश्चिमी दरवाज़े के पास स्थित है। (iii) मेरी जानकारी के अनुसार, घटना से पहले देवेंद्र और आरोपी के बीच नाली को लेकर कोई विवाद नहीं था। राम बाबू का उत्तरी चबूतरा फैलने लगा था। वह नाली साफ़ करता था और उससे निकली मिट्टी अपने चबूतरे पर लगाता था, जिससे चबूतरा ऊँचा हो जाता था और पानी अंदर नहीं रिसता था।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



उस समय, नाली बंद थी और उत्तरी तरफ़ की गली में पानी भर गया था। नाली के उत्तरी तरफ़ बने बाँध के पास पानी फैला हुआ था, लेकिन पूरी तरह भरा नहीं था। बाँध से थोड़ा पूरब की ओर, उत्तर की तरफ़ जाने वाली गली में, लगभग एक हाथ जगह सूखी थी, बाकी जगह मिट्टी से ढकी थी। यह सूखी जगह शिवचरण नाई की दक्षिणी दीवार के किनारे थी। मैंने देवेंद्र को दौड़ते हुए देखा, लेकिन मैंने यह नहीं देखा कि वह सूखी जगह से दौड़ा या गीली जगह से। गली की मिट्टी थोड़ी गीली थी।

(iv) घटना के समय मैंने देवेंद्र को नहीं बुलाया था, वह खुद ही भागकर आया था। मैंने इंस्पेक्टर को यह बयान नहीं दिया था कि "हम दोनों ने कहा कि देवेंद्र, यहाँ आओ और उसे अपने बैठक वाले कमरे के तख्त पर ले गए।" इंस्पेक्टर ने मेरे बयान में यह कैसे लिख दिया, मुझे नहीं पता। मैं कहाँ खड़ा था, तिजोरी कहाँ रखी थी, राम प्रताप आरोपी (देवेंद्र) के पश्चिम दिशा में था; और जब देवेंद्र आया और मेरे तख्त पर लेट गया, तो मैंने उसके पैरों पर कोई खरोंच या मिट्टी नहीं देखी।

(v) यह कहना गलत है कि देवेंद्र को मेरे बैठक वाले कमरे में उसी तख्त पर गोली मारी गई थी, जिस पर उसका शव पड़ा था। यह कहना भी गलत है कि देवेंद्र को उसके शरीर के बिल्कुल करीब से गोली मारी गई थी, बल्कि उसे लगभग एक गज की दूरी से गोली मारी गई थी। यह कहना गलत है कि मैं आरोपी को झूठा फंसा रहा हूँ। यह कहना गलत है कि मैं घटना के समय के बारे में गलत जानकारी दे रहा हूँ।

15. पी.डब्ल्यू-3, डॉ. के.सी. जैन ने 01.03.1984 को दोपहर 3:30 बजे देवेंद्र कुमार के शव का पोस्टमार्टम किया था। उन्होंने उस गोली (प्रदर्श V) को प्रमाणित किया है, जो देवेंद्र कुमार के शरीर से बरामद की गई थी। उन्होंने उस पैकेट पर चिपकाए गए लेबल (प्रदर्श का-2) को भी प्रमाणित किया है, जिसके अंदर वह गोली सीलबंद लिफाफे में रखी थी। उन्होंने देवेंद्र कुमार के कपड़े आदि (प्रदर्श I से IV) अपने कब्जे में लिए थे और इन वस्तुओं की एक सूची (प्रदर्श का-3) तैयार की थी। उन्होंने पोस्टमार्टम रिपोर्ट (प्रदर्श का-4) को भी प्रमाणित किया है।

16. पी.डब्ल्यू-4, एस.एस. सेंगर, इस मामले के विवेचना अधिकारी हैं। उन्होंने शवपरीक्षण रिपोर्ट (प्रदर्श का-7), चालान-नाश (प्रदर्श का-8), फोटो-नाश (प्रदर्श का-9), और देवेंद्र कुमार के शव का पोस्टमार्टम कराने के संबंध में जांच अधिकारी द्वारा सी.एम.ओ. को लिखे गए पत्र (प्रदर्श का-10)

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



तथा आर.आई. पुलिस, इटावा को लिखे गए पत्र (प्रदर्श का-11) को प्रमाणित किया है। उन्होंने आगे नक्शा नज़री (प्रदर्श का-12) और उस तख्त से, जिस पर शव पड़ा था, साधारण और खून लगे लकड़ी के सैंपल को कब्जे में लेने से संबंधित फर्द (प्रदर्श का-13) को भी साबित किया है। तख्त की साधारण लकड़ी के सैंपल (प्रदर्श VI) और तख्त की खून लगी लकड़ी के सैंपल (प्रदर्श VII) को भी उन्होंने ही साबित किया है। उन्होंने चार्जशीट (प्रदर्श का-15) और धारा 83 दं.प्र.सं. के तहत आरोपी की संपत्ति की कुर्की से संबंधित मेमो को भी साबित किया है। आरोपी के खिलाफ धारा 302 भा.दं.सं. के तहत मामला दर्ज करने से संबंधित चिक एफ.आई.आर. (प्रदर्श का-16) और जी. डी. (प्रदर्श का-17) को भी उन्होंने ही साबित किया है।

17. मृतक देवेंद्र कुमार के कपड़े वगैरह (प्रदर्श I से IV), खून से सने तख्त का सैंपल (प्रदर्श VII) और तख्त की आम लकड़ी (प्रदर्श VI), गोली (प्रदर्श V) को 05.09.1984 को एक खास मैसेंजर के ज़रिए फॉरेंसिक साइंस लेबोरेटरी, U.P., आगरा भेजा गया था। विद्वान A.D.जी.सी ने राज्य लेबोरेटरी के संयुक्त निदेशक का पत्र (प्रदर्श का- 6) और उक्त चीज़ों (प्रदर्श I से IV, प्रदर्श V और प्रदर्श VII) की केमिकल जांच से जुड़ी रिपोर्ट प्रदर्श का - 5 भी पेश की है। केमिकल जांच से पता चला कि लकड़ी का सैंपल (प्रदर्श VII), अंडरवियर (प्रदर्श III), बनियान (प्रदर्श II) और जर्सी (प्रदर्श IV) पर इंसान का खून लगा था और गोली (प्रदर्श V) पर भी खून लगा था।

18. हालांकि आरोपियों ने बचाव में एक खास दलील पेश की थी, फिर भी उन्होंने बचाव में कोई सबूत पेश नहीं किया। अभियोजन पक्ष के गवाहों से जिरह में पूछे गए सवालों और दं.प्र.सं. की धारा 313 के तहत आरोपियों के बयानों से यह नतीजा निकलता है कि आरोपियों ने इस बात से इनकार नहीं किया कि देवेंद्र कुमार की हत्या गोली मारकर की गई थी। हालांकि, उन्होंने घटना के समय और जगह पर सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि देवेंद्र कुमार की हत्या 28-29.02.1984 की रात को उसी जगह पर की गई थी जहाँ उसकी लाश पड़ी थी, यानी जय राम की बैठक में, और इसकी वजह उस घर में उसके नाजायज़ संबंध थे।

19. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता ने यह दलील दी है कि :-

(i) एफ.आई.आर. का समय गलत (पहले का) बताया गया है। उन्होंने यह बताया है कि 29.02.1984 को दोपहर 3:30 बजे शव को पुलिस स्टेशन ले जाने के लिए कांस्टेबल को सौंपा गया था, लेकिन वह 01.03.1984 को इटावा पुलिस लाइन पहुँचा; और इस तथ्य के आधार पर, उन्होंने यह तर्क

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



दिया कि शव सौंपने के बारे में शवपरीक्षा रिपोर्ट में बताया गया समय गलत है, और एफ.आई.आर. दर्ज करने का समय भी गलत है तथा उसे पहले का दिखाया गया है।

(ii) राम प्रताप और तिजोली जैसे स्वतंत्र गवाहों की विवेचना न किए जाने से अभियोजन पक्ष का मामला अविश्वसनीय हो जाता है।

(iii) घटना का मकसद साबित नहीं किया जा सकता, क्योंकि पी.डब्ल्यू.-1 और पी.डब्ल्यू.-2 के बयानों तथा घटनास्थल के नक्शे (नक्शा नज़री) में भारी विरोधाभास है।

(iv) घटनास्थल संदिग्ध है, क्योंकि चश्मदीद गवाह के अनुसार, घटनास्थल एक नाली के आसपास की ज़मीन थी जो नाली से पानी फैलने के कारण गीली हो गई थी; लेकिन पी.डब्ल्यू.-2 के अनुसार, मृतक के पैरों पर कोई कीचड़ नहीं देखा गया था।

(v) यह तथ्य कि बिंदु 'बी' (जहाँ देवेंद्र कुमार को गोली लगी थी) और बिंदु 'सी' (जहाँ देवेंद्र कुमार का शव मिला था) के बीच की ज़मीन पर कोई खून नहीं मिला, जबकि स्थान 'बी' से स्थान 'सी' की दूरी लगभग 30-35 कदम है, घटनास्थल के बारे में संदेह पैदा करता है।

(vi) पी.डब्ल्यू.-1 और पी.डब्ल्यू.-2 के बयानों में विरोधाभास है। पी.डब्ल्यू.-1 ने अपनी लिखित रिपोर्ट में यह ज़िक्र किया था कि नरेश बाबू और सतीश कुमार अपने हाथों में देसी पिस्तौल लेकर घटनास्थल पर आए थे; लेकिन न्यायालय में उन्होंने यह बयान दिया कि जब वह घटनास्थल पर पहुँचे, तब सतीश कुमार के हाथ में कोई देसी पिस्तौल नहीं थी।

(vii) पी.डब्ल्यू.-2 ने दं.प्र.सं. की धारा 161 के तहत अपने बयान में कहा था कि सतीश कुमार ने देसी पिस्तौल लोड की थी और उसी पिस्तौल से गोली चलाई थी, लेकिन कोर्ट में उसने कहा कि उसने सतीश कुमार को देसी पिस्तौल लोड करते हुए नहीं देखा।

20. दूसरी ओर, विवादित फैसले और आदेश का समर्थन करते हुए, विद्वान ए.जी.ए. ने यह तर्क दिया है कि :-

(i) मुखबिर द्वारा तुरंत एफ.आई.आर. दर्ज कराई गई थी और एफ.आई.आर. में आरोपी-अपीलकर्ता का नाम भी था। अभियोजन पक्ष द्वारा मकसद भी विधिवत साबित किया गया था।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



(ii) जहाँ तक स्वतंत्र गवाहों की विवेचना न किए जाने का सवाल है, पी.डब्ल्यू.-2, जय राम, एक स्वतंत्र चश्मदीद गवाह है। इसके अलावा, यह कोई कानून नहीं है कि एफ.आई.आर. में बताए गए हर स्वतंत्र गवाह की विवेचना की जानी चाहिए।

(iii) चालान नाश (प्रदर्श का -8) से पता चलता है कि घटना स्थल से पुलिस लाइन, इटावा की दूरी 34 किमी० है। यह पूरी तरह से संभव है कि 29.02.1984 को शव को ले जाने के लिए कोई व्यवस्था न हो पाई हो। किसी भी स्थिति में, घटना स्थल से, विवेचना-पड़ताल के बाद, शव को पुलिस लाइन, इटावा ले जाने में हुई कोई भी देरी, एफ.आई.आर. दर्ज होने के समय के बारे में कोई संदेह पैदा नहीं करती है। इसलिए, एफ.आई.आर. पहले से दर्ज नहीं है।

(iv) पी.डब्ल्यू.-1 और पी.डब्ल्यू.-2 इस मामले के चश्मदीद गवाह हैं और उन्होंने अभियोजन पक्ष के मामले को पूरी तरह से साबित किया है। दोनों गवाहों के बयानों में कोई खास विरोधाभास नहीं है। यदि कोई छोटा-मोटा विरोधाभास है भी, तो उसे नज़रअंदाज़ किया जा सकता है।

(v) अभियोजन पक्ष ने अपने मामले को बिना किसी उचित संदेह के सही साबित कर दिया है। इसलिए, इस अपील में कोई दम नहीं है और इसे खारिज कर दिया जाना चाहिए।

21. पी.डब्ल्यू.-1 (शशि प्रभा) और पी.डब्ल्यू.-2 जय राम के बयानों और सबूतों पर विचार करने के बाद, हमने पाया कि मकसद के बारे में अभियोजन पक्ष की थ्योरी पूरी तरह से भरोसेमंद नहीं है, क्योंकि नाली (drain) में रुकावट आने से पानी आरोपी के अपने ही ज़मीन पर भर जाएगा, जो उनके घर के उत्तरी तरफ स्थित है, जिससे वह ज़मीन कम उपयोगी हो जाएगी।

22. हमने यह भी देखा कि पी.डब्ल्यू.1 (श्रीमती शशि प्रभा, मृतक की बहन) द्वारा दिए गए बयान में एक गंभीर कमी है। अभियोजन पक्ष के अनुसार, पी.डब्ल्यू.1 ने घटना को बिन्दु डी [उनके घर के चबूतरे (प्रदर्श का12)] से देखा था, जबकि मृतक को कथित तौर पर बिन्दु बी (प्रदर्श का12) पर गोली मारी गई थी। हालाँकि, नक्शा नज़री (प्रदर्श का12) से यह साफ ज़ाहिर है कि इन दोनों बिंदुओं के बीच एक ढांचा (छप्पर) मौजूद है। इस तरह की रुकावट की मौजूदगी इस बात पर संदेह पैदा करती है कि क्या पी.डब्ल्यू.1 को घटना का साफ और बिना किसी रुकावट के नज़ारा दिख सकता था। यह परिस्थिति, जो कि अपने आप में काफी महत्वपूर्ण है, पी.डब्ल्यू.1 के सबूतों की विश्वसनीयता को कमज़ोर करती है।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



23. सबसे महत्वपूर्ण बात, जो अभियोजन पक्ष के मामले में काफी संदेह पैदा करती है, वह यह है कि नक्शा नज़री में बिन्दु बी, जहाँ कथित तौर पर मृतक को गोली लगी थी, और बिन्दु सी, जहाँ आखिरकार उसका शव मिला था, अभिलेख पर मौजूद सबूतों के अनुसार लगभग 30-35 कदम की दूरी पर दिखाए गए हैं; फिर भी इस पूरे रास्ते पर खून के कोई निशान नहीं मिले। अगर सच में मृतक को बिन्दु बी पर गोली लगी थी और उसके बाद वह बिन्दु सी पर गिर गया था, तो यह स्वाभाविक ही था कि बीच के रास्ते पर खून के निशान मिलते। खून के ऐसे निशानों का पूरी तरह से न मिलना, घटनाओं के बारे में अभियोजन पक्ष के बयान पर संदेह पैदा करता है। इसके अलावा, इस न्यायालय के सामने रखे गए सबूतों पर ध्यान से विचार करने पर, हमने पाया कि बिन्दु बी (वह जगह जहाँ मृतक को गोली मारी गई थी) नाली के कारण, जैसा कि स्वीकार किया गया है, गीला और कीचड़ भरा था; फिर भी गवाहों ने साफ तौर पर कहा कि मृतक के पैरों पर कोई कीचड़ नहीं मिला। यह दावा उस जगह की प्राकृतिक स्थिति के बिल्कुल विपरीत है। मृतक के पैरों पर कीचड़ का न होना—इसके बावजूद कि कथित तौर पर वह ऐसी जगह पर मौजूद था—अभियोजन पक्ष के बयान की सत्यता को लेकर गंभीर संदेह पैदा करता है।

24. एक और बात जो अभियोजन पक्ष के मामले को काफी कमज़ोर करती है, वह यह है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट से साफ पता चलता है कि गोली बहुत करीब से (2.5 सेमी. x 2.0 सेमी.) सीने के सामने मारी गई थी, जिससे टैटू जैसे निशान और कालापन आ गया था, और इसके परिणामस्वरूप स्टर्नम (सीने की हड्डी) में फ्रैक्चर हो गया था, साथ ही दाईं ओर की 7वीं, 8वीं पसली और बीच के हिस्से में भी फ्रैक्चर हो गया था। ऐसी स्थिति में, यह बहुत ही असंभव लगता है कि मृतक, जिसे इतनी गंभीर और करीब से गोली लगी हो, वह चलकर या हिल-डुलकर इतनी दूरी तय कर पाता। ऐसी चोट का स्वाभाविक और तत्काल नतीजा यह होता कि वह गोली चलने वाली जगह पर या उसके आस-पास ही गिर जाता। अभियोजन पक्ष की ओर से इस बारे में कोई स्पष्टीकरण न होना कि मृतक ने यह दूरी कैसे तय की, उसके मामले को और भी कमज़ोर कर देता है।

25. घटना किस जगह पर हुई, इस बारे में काफी अनिश्चितता है; और जब घटना की जगह ही संदिग्ध हो जाती है, तो अभियोजन पक्ष के पूरे मामले की नींव ही हिल जाती है (रामसेवक और अन्य बनाम मध्य प्रदेश राज्य, (2002) 11 एससीसी 259)। अपराध स्थल को पूरी निश्चितता के साथ साबित करना अभियोजन पक्ष का कर्तव्य है, क्योंकि यही गवाहों की गवाही का मूल्यांकन “अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



करने का आधार बनता है। यदि घटना की जगह को किसी भी उचित संदेह से परे साबित नहीं किया जा सकता, तो अभियोजन पक्ष की कहानी अविश्वसनीय हो जाती है।

26. अपीलकर्ता सतीश कुमार की भूमिका के संबंध में गवाह पी.डब्ल्यू.-1 और पी.डब्ल्यू.-2 के बयानों में एक बड़ा विरोधाभास सामने आता है। पी.डब्ल्यू.-1 ने अपनी लिखित रिपोर्ट में साफ तौर पर जिक्र किया था कि नरेश बाबू और सतीश कुमार अपने हाथों में देसी पिस्तौलें लेकर घटना स्थल पर आए थे। हालाँकि, न्यायालय में अपनी गवाही के दौरान, उसने कहा कि जब सतीश कुमार मौके पर पहुँचा था, तब उसके पास कोई पिस्तौल नहीं थी। इसी तरह, पी.डब्ल्यू.-2 ने दं.प्र.सं. की धारा 161 के तहत दिए गए अपने बयान में दावा किया था कि सतीश कुमार ने देसी पिस्तौल में गोली भरी थी और उससे गोली चलाई थी; लेकिन न्यायालय में उसने यह स्वीकार किया कि उसने सतीश कुमार को पिस्तौल में गोली भरते हुए नहीं देखा था। अभियोजन पक्ष की कहानी में ये विरोधाभास गवाहों की विश्वसनीयता पर संदेह पैदा करते हैं और आरोपी के खिलाफ मामले को कमज़ोर करते हैं।

27. ऊपर की चर्चा से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि विचारण न्यायालय ने सबूतों से साफ ज़ाहिर होने वाले कुछ ज़रूरी पहलुओं पर ध्यान नहीं दिया और मामले की सभी खासियतों का पूरी तरह या विस्तार से आकलन नहीं किया, जो सब मिलकर, अभियोजन पक्ष की कहानी पर एक वाजिब शक पैदा करते हैं। विचारण न्यायालय के निष्कर्ष ज़रूरी सबूतों के सही इस्तेमाल पर आधारित नहीं हैं और इसलिए उन्हें रद्द किया जाता है।

28. ऊपर चर्चा किए गए तथ्यों और परिस्थितियों को देखते हुए, हमारी राय है कि अभियोजन पक्ष अपना मामला वाजिब शक से परे साबित करने में नाकाम रहा है। इसलिए, शक का फ़ायदा आरोपी-अपीलकर्ता सं. 2, सतीश कुमार को दिया जाना चाहिए। नतीजतन, अपीलकर्ता सं. 2, सतीश कुमार के संबंध में अपील मंज़ूर किए जाने लायक है। अपीलकर्ता सं. 2, सतीश कुमार के संबंध में विचारण न्यायालय का फैसला रद्द किया जाता है। अपीलकर्ता सं. 2, यानी सतीश कुमार को उन सभी आरोपों से बरी किया जाता है जिनके लिए उन पर विचारण चलाया गया था।

29. अपीलकर्ता सं. 2, सतीश कुमार के संबंध में अपील स्वीकार की जाती है।

30. अपीलकर्ता सं. 2, सतीश कुमार, ज़मानत पर हैं। उनके ज़मानत बंधपत्र निरस्त किए जाते हैं और प्रतिभू उन्मोचित किए जाते हैं।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



31. निर्णय की एक प्रामाणित प्रति, विचारण न्यायालय के अभिलेख के साथ, पालन के लिए संबंधित मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट/विचारण न्यायालय को भेजी जाए।

16 फ़रवरी, 2026

एस.के.एस.

(न्यायमूर्ति जय कृष्ण उपाध्याय) (न्यायमूर्ति सिद्धार्थ)

Translated Version. Not For Legal Use.

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”